



प्रगति, विकास और आशा सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का गृह बुलेटिन

वर्ष 11 अंक 5

www.csir.res.in

सर्ग 2023

भारत-इजराइल मित्रता-औद्योगिक अनुसंधान और विकास सहयोग के नए युग का प्रारंभ

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय की वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) तथा इजराइल के रक्षा मंत्रालय के रक्षा अनुसंधान और विकास निदेशालय (डीडीआर एंड डी) के बीच औद्योगिक अनुसंधान और विकास सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर



भारत और इजराइल के बीच विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में भारत के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) तथा इजराइल के रक्षा मंत्रालय के रक्षा अनुसंधान और विकास निदेशालय (डीडीआर एंड डी) के

बीच औद्योगिक अनुसंधान और विकास के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

सीएसआईआर की महानिदेशक और

डीएसआईआर की सचिव डॉ. एन कलाईसेल्वी ने विज्ञान और टेक्नॉलोजी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और सीएसआईआर सोसायटी के उपाध्यक्ष को बैठक में शामिल होने तथा सीएसआईआर को उनके निरंतर समर्थन के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया और सीएसआईआर के तकनीकी और अनुसंधान कौशल के प्रदर्शन के साथ एयरोस्पेस, हेल्थ केयर, ऊर्जा में डीडीआर एंड डी इजराइल के साथ किए जा रहे सहयोग की जानकारी दी। उन्होंने सीएसआईआर के प्राथमिक विषयों को साझा करते हुए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, क्वांटम तथा सेमीकंडक्टरों, सिंथेटिक बायोलॉजी जैसे उच्च प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में इजराइल के साथ सहयोग को आगे बढ़ाने में डीडीआर एंड डी के हित पर सहमति व्यक्त की।

डीडीआर एंड डी के प्रमुख डॉ. डेनियल गोल्ड ने सीएसआईआर-डीडीआर एंड डी के बीच जारी सहयोग को स्वीकार करते हुए कहा कि यह सहयोग दोनों देशों के लिए लाभकारी होगा। उन्होंने कहा कि डीडीआर एंड डी न केवल अनुसंधान एवं विकास संगठनों के साथ बल्कि दोनों पक्षों के स्टार्ट-अप

तथा कंपनियों, उद्यम पूंजी के साथ भी सहयोग का स्वागत करता है। उन्होंने बताया कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और फोटोनिक्स इजराइल की शक्ति है और उच्च प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में सीएसआईआर के साथ सहयोग का स्वागत किया, जो बेहतर

भविष्य बनाने का मार्ग प्रशस्त करेगा।

भारत और इजराइल के सफल राजनीतिक संबंधों के तीन दशकों की सफलता पर बल देते हुए भारत में इजराइल के राजदूत श्री नौर गिलोन ने इजराइल और भारत के बीच घनिष्ठ मैत्रीपूर्ण संबंधों पर बल दिया

जो 2018 में दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों की यात्राओं के बाद एक रणनीतिक साझेदारी में परिणत हुए हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान सीएसआईआर-डीडीआर एंड



डी सहयोग एक और आयाम जोड़ेगा और भारत-इजराइल संबंधों के लिए मील का पत्थर होगा।

डॉ. एन कलाईसेल्वी और डॉ. डेनियल गोल्ड ने भारत सरकार के माननीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री और



सीएसआईआर सोसायटी के उपाध्यक्ष डॉ. जितेंद्र सिंह की गरिमामय उपस्थिति में सीएसआईआर-डीडीआर एंड डी समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

समझौता ज्ञापन विशिष्ट परियोजनाओं को लागू करने के माध्यम से पारस्परिक रूप से सहमत आयोगिक क्षेत्रों में औद्योगिक अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों में सहयोग को सक्षम बनाएगा।

सहयोग में हेल्थ केयर सहित एयरोस्पेस और इलेक्ट्रोनिक्स इंस्ट्रुमेंटेशन, सिविल, अवसंरचना तथा इंजीनियरिंग, रसायन तथा पेट्रो केमिकल्स, ऊर्जा



उपकरणों सहित सतत ऊर्जा, इकोलॉजी, पर्यावरण, पृथ्वी और समुद्र विज्ञान तथा जल, खनन, खनिज, धातु और पदार्थ, कृषि, पोषण तथा जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र शामिल हैं।

समझौता ज्ञापन के माध्यम से सहयोग को आगे बढ़ाया जाएगा तथा प्रौद्योगिकी सहयोग को आगे बढ़ाने के लिए सीएसआईआर-डीडीआर एंड डी के प्रमुखों के नेतृत्व में एक संयुक्त संचालन समिति द्वारा क्रियान्वयन की निगरानी की जाएगी।

सीएसआईआर-डीडीआर एंड डी के बीच हाइड्रोजन तथा एयरोस्पेस में विशिष्ट सहयोग पर वार्ता की जानकारी सीएसआईआर-राष्ट्रीय वातरिक्ष प्रयोगशालाओं (सीएसआईआर-एनएएल) के निदेशक डॉ. अभय पशिलकर और सीएसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (सीएसआईआर-एनसीएल) के निदेशक डॉ. आशीष लेले ने दी। उन्होंने इस क्षेत्र में भविष्य की प्रौद्योगिकियों पर सहयोग का स्वागत किया, जिसमें क्रमशः हाई अल्टीच्यूलेड प्लेटफॉर्म, सीएसआईआर का हाइड्रोजन वैली प्रोग्राम शामिल हैं।

सीएसआईआर-भारतीय रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-

आईआईसीटी) और मैसर्स 101 थैरेप्यूटिक्स के बीच कोविड-19 दवा के नैदानिक परीक्षण के संचालन के लिए इसकी चिकित्सीय क्षमता पर विशेष सहयोग के बारे में जानकारी दी गई। यदि यह असफल होता है तो यह भविष्य की महामारियों की तैयारी के लिए काफी उपयुक्त और प्रभावी



साबित होगा।

बैठक में सीएसआईआर-आईआईसीटी और मैसर्स 101 थैरेप्यूटिक्स के बीच सहयोग समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किए गए।

इस अवसर पर डॉ. जितेन्द्र सिंह ने कहा कि भारत के प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत के विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में यह वर्ष बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत जी-20 की अध्यक्षता कर रहा है, मोटे अनाजों का

अंतर्राष्ट्रीय वर्ष मना रहा है और साथ ही भारत और इजराइल में सफल राजनयिक संबंधों के तीस वर्ष पूरे हुए हैं।

उन्होंने बताया कि सीएसआईआर के पास लगभग सभी चिन्हित प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में विशेष प्रयोगशालाएं हैं, इसलिए उन्होंने उचित क्षमता का आश्वासन दिया।

उदाहरण के लिए सीएसआईआर-एनसीएल द्वारा स्वदेशी हाइड्रोजन ईंधन, बैट्री बस, सीएसआईआर-आईआईएम द्वारा बैंगनी क्रांति (लेवेंडर खेती)। उन्होंने इजराइल के साथ प्रौद्योगिकी साझेदारी का स्वागत किया तथा भारत-इजराइल संबंधों को मजबूत बनाने के प्रयासों के लिए दोनों पक्षों को बधाई दी।

अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी कार्य निदेशालय (आईएसटीएडी, सीएसआईआर की प्रमुख डॉ. रमा स्वामी बंसल ने सीएसआईआर को निरंतर सहयोग देने के लिए मंत्री महोदय, सहयोग को औपचारिक रूप देने के लिए इजराइल की टीम तथा सीएसआईआर और विदेश मंत्रालय के अपने सहयोगियों को समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर पर समारोह में उनकी गरिमामय उपस्थिति पर धन्यवाद दिया।

भारत और इजराइल इनोवेशन और स्टार्टअप जैसे क्षेत्रों में साझेदारी बढ़ाएंगे

भारत और इजराइल ने कई प्रमुख प्रौद्योगिकी क्षेत्रों पर ध्यान देने के साथ औद्योगिक अनुसंधान और विकास सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

सीएसआईआर-विज्ञान केंद्र में केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह की गरिमामयी उपस्थिति में सीएसआईआर और रक्षा अनुसंधान और विकास निदेशालय (डीडीआर एंड डी), इजराइल के रक्षा मंत्रालय के बीच बहु-क्षेत्रीय समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।

भारत और इजराइल इनोवेशन और स्टार्टअप जैसे क्षेत्रों में साझेदारी बढ़ाएंगे और गहन द्विपक्षीय सहयोग के एक नए चरण की शुरुआत करेंगे। यह बात केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) विज्ञान और प्रौद्योगिकी, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पृथ्वी विज्ञान, एमओएस पीएमओ, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष, डॉ. जितेंद्र सिंह ने इजरायल के रक्षा मंत्रालय के डीडीआर एंड डी के प्रमुख डॉ. डेनियल गोल्ड के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय इजराइल प्रतिनिधि मंडल से मुलाकात के दौरान कही।

इस अवसर पर, भारत और इजराइल ने एयरोस्पेस, इलेक्ट्रॉनिक्स इंस्ट्रुमेंटेशन, सिविल, इंफ्रास्ट्रक्चर और इंजीनियरिंग, इकोसिस्टम, पर्यावरण, पृथ्वी और महासागर विज्ञान और जल, खनिज, धातु और सामग्री, रसायन और पेट्रोकेमिकल्स, ऊर्जा (पारंपरिक और गैर-पारंपरिक) और

ऊर्जा उपकरण, कृषि, पोषण और बायोटेक और हेल्थकेयर जैसे कई प्रमुख प्रौद्योगिकी क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हुए औद्योगिक अनुसंधान और विकास सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

नई दिल्ली के सीएसआईआर-विज्ञान केंद्र में केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह की गरिमामयी उपस्थिति में सीएसआईआर और रक्षा अनुसंधान और विकास निदेशालय (डीडीआर एंड डी), इजराइल के रक्षा मंत्रालय के बीच बहु-क्षेत्रीय समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने समझौते पर हस्ताक्षर का स्वागत करते हुए कहा कि 2023 देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण वर्ष है क्योंकि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में जी 20 की अध्यक्षता कर रहा है।

यह वह वर्ष भी है जब भारत और इजराइल सफल राजनयिक संबंधों के 30 वर्ष पूरे होने का जश्न मना रहे हैं।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि वे आशावान हैं कि यह समझौता नवाचार, प्रौद्योगिकी और स्टार्टअप जैसे क्षेत्रों में भारत-इजरायल साझेदारी में एक नया चरण खोलेगा।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि भारत-इजराइल न केवल द्विपक्षीय साझेदार हैं, बल्कि जल, ऊर्जा, परिवहन, अंतरिक्ष, स्वास्थ्य और खाद्य सुरक्षा क्षेत्रों में संयुक्त



निवेश और नई पहलों के माध्यम से हमारी दुनिया के सामने मौजूद कुछ सबसे बड़ी चुनौतियों का समाधान भारत, इजराइल, संयुक्त अरब अमीरात और संयुक्त राज्य अमेरिका के समूह-“आई2यू2” के माध्यम से करने में बड़ी भूमिका निभाते हैं।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार जमीनी स्तर पर कार्रवाई करने के लिए आवश्यक नीति और बजटीय सहायता प्रदान करके हमारे देश में एस एंड टी विकास और हैंड होल्डिंग स्टार्ट-अप इनोवेशन को बढ़ावा दे रही है। विज्ञान और तकनीक हमेशा से भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। उन्होंने कहा कि भारतीय विज्ञान को विशेष रूप से उभरते परिदृश्य और प्रतिस्पर्धी अर्थव्यवस्था में वृद्धि और विकास के सबसे शक्तिशाली उपकरणों में से एक माना जाता है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि अंतरिक्ष,



स्वास्थ्य, खाद्य, कृषि, ऊर्जा, एयरोस्पेस, स्मार्ट सिटीज, पर्यावरण, बुनियादी ढांचा, सामग्री आदि और सतत विकास हमारी वर्तमान सरकार के प्रमुख स्तंभ और केंद्रित क्षेत्र हैं।

इजरायल के रक्षा मंत्रालय के डीडीआर एंड डी के प्रमुख ब्रिगेडियर जनरल (सेवानिवृत्त) डॉ. डेनियल गोल्ड ने कहा कि यह देखकर खुशी हो रही है कि, 2022-23 में, भारत और इजरायल ने सफल राजनयिक संबंधों के 30 साल पूरे होने का जश्न मनाया गया। उन्होंने कहा कि भारत और इजरायल बहुत अच्छे दोस्त हैं और उच्च प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में सहयोग करने की बहुत संभावनाएं हैं।

केंद्रीय मंत्री को यह जानकारी प्रसन्नता हुई कि भारत और इजरायल के पास

जल, कृषि, आतंकवाद का मुकाबला और रक्षा सहित सभी सहयोग क्षेत्रों में द्विपक्षीय परामर्श तंत्र हैं। उन्होंने कहा कि रक्षा विशेष रूप से इजरायल के साथ सहयोग की प्राथमिकता रही है और नवंबर 2021 में, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) और डीडीआर एंड डी ने दोहरे उपयोग वाली तकनीकों के विकास के लिए दोनों देशों के स्टार्टअप और एमएसएमई में नवाचार को बढ़ावा देने और त्वरित आरएंडडी को बढ़ावा देने के लिए एक द्विपक्षीय नवाचार समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि विशेष रूप से प्रौद्योगिकी विकास और कार्यान्वयन के लिए द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करना आवश्यक है।

सीएसआईआर औद्योगिक अनुसंधान और

विकास पर अपने मजबूत ध्यान के साथ, एक दूसरे के घरेलू औद्योगिक क्षेत्र को मजबूत करने के साथ-साथ उनके संयुक्त विकास को अन्य देश तक भी आगे ले जाने के लिए अपने इजरायली समकक्षों के साथ काम कर सकता है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने यह जानकारी प्रसन्नता व्यक्त की कि हेल्थकेयर में संयुक्त गतिविधियां पहले ही शुरू हो चुकी हैं, और एयरोस्पेस, क्वांटम टेक्नोलॉजी, लेजर, ग्रीन हाइड्रोजन, इंस्ट्रुमेंटेशन और पानी जैसे अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों के लिए आगे की राह बनाई गई है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने रिश्ते को मजबूत करने के प्रयासों के लिए डीजी, सीएसआईआर और प्रमुख डीडीआर एंड डी को बधाई दी।

सीएसआईआर-सीडीआरआई, लखनऊ में ऊर्जा साक्षरता प्रशिक्षण और जलवायु घड़ी जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया

जल वायु परिवर्तन विश्व भर को प्रभावित कर रहा है, लेकिन 1-5 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान उन 3 अरब से अधिक लोगों के लिए विनाशकारी साबित होगा, जो जलवायु

परिवर्तन के लिए अत्यधिक संवेदनशील स्थानों में रहते हैं, जैसा कि जलवायु परिवर्तन पर अंतः सरकारी पैनल (आईपीसीसी) की रिपोर्ट में बताया गया है। सीएसआईआर सीडीआरआई, लखनऊ में जलवायु घड़ी

और इसका महत्व, जलवायु परिवर्तन और इसके परिणाम की जानकारी देने हेतु युवाओं के लिए ऊर्जा साक्षरता प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। जिसमें हाइजिया कॉलेज ऑफ फार्मसी, लखनऊ

हाइजिया इंस्टीट्यूट फार्मसी, लखनऊ और विवेक कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी एजुकेशन बिजनौर, उत्तर प्रदेश के छात्रगण संस्थान में विश्व पृथ्वी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित जिज्ञासा कार्यक्रमों में सम्मिलित हुए। 24 अप्रैल से 27 अप्रैल तक आयोजित ऊर्जा साक्षरता प्रशिक्षण कार्यक्रम में तीन अलग-अलग कॉलेजों के लगभग 50 छात्रों और 2 फैकल्टी ने जागरूकता कार्यक्रम में भाग लिया।

प्रतिभागियों को वेबसाइट के जरिए क्लाइमेट क्लॉक के रियल टाइम डेटा के बारे में जानकारी दी गई। क्लाइमेट क्लॉक हमें यह बताती है कि वास्तविक समय के आंकड़ों के आधार पर वैश्विक तापमान में 1-5 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि होने में कितना कम समय बचा है और यदि तापमान में वृद्धि हुई तो इसका परिणाम अपरिवर्तनीय होगा। इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों को ऊर्जा साक्षरता प्रशिक्षण लेने और जलवायु को बचाने के लिए प्रेरित किया गया। प्रतिभागियों ने जलवायु को बचाने और कार्बन फुटप्रिंट को कम करने की शपथ ली।

डॉ. संजीव यादव, वरिष्ठ वैज्ञानिक सीडीआरआई लखनऊ ने जलवायु परिवर्तन से होने वाले दुष्प्रभावों पर चर्चा की, उन्होंने कहा ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन

मुख्य रूप से "Vg2 से पृथ्वी का तापमान प्रतिदिन बढ़ रहा है जिससे ग्लेशियर पिघल रहें हैं और समुद्र का स्तर बढ़ रहा है जिससे कई देशों के तटीय

क्षेत्र लगभग जलमग्न होने के कगार पर हैं। विश्व पृथ्वी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित ये छात्र-वैज्ञानिक कनेक्ट कार्यक्रम, सीएसआईआर-जिज्ञासा के अन्तर्गत में आयोजित किया गए थे जिसमें फार्मसी छात्रों हेतु कैरियर के विभिन्न अवसरों की भी जानकारी साझा की गई।

डॉ. संजीव यादव ने विभिन्न क्षेत्रों के बारे में बताया जहां छात्र अपनी सामर्थ एवं अपनी कमजोरियों को ध्यान में रखते हुए देखते हुए खुद के लिए उपयुक्त विकल्प चुन सकते हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं, जैसे बायोमेडिकल रिसर्चर्स, मेडिसिन एडवाइजर, पेटेंट अर्टनी, फॉरेंसिक साइंटिस्ट, रेगुलेटरी अटॉर्नी, क्वालिटी कंट्रोल केमिस्ट, क्वालिटी एश्योरेंस, मेडिकल साइंस



लाइजनिंग, फार्माकोविजिलेंस एवं अन्य। फिर उन्होंने समझाया कि कैसे एक नवीन यौगिक एक दवा के रूप में परिवर्तित विकसित किया जाता है और किस तरह से औषधि अनुसंधान एवं विकास के विभिन्न क्षेत्र इसमें शामिल होते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को ये भी बताया कि कैसे वे सीएसआईआर-सीडीआरआई के साथ अपनी यात्रा शुरू कर सकते हैं? इसके अलावा, प्रतिभागियों ने विभिन्न प्रयोगशालाओं का दौरा किया और वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की और विभिन्न प्रयोगों के बारे में जाना।

विश्व विज्ञान विभाग में, डॉ. एस. के. रथ ने औषधि खोज और विकास में विष विज्ञान अनुसंधान के महत्व को समझाया।

भारत विश्व की 'चक्रीय अर्थव्यवस्था (सर्कुलर इकोनॉमी)' में प्रमुख योगदानकर्ता बनने के लिए तैयार है : केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह

ub. fnYyh में "एक सप्ताह-एक प्रयोगशाला (वन वीक-वन लैब)" कार्यक्रम के एक हिस्से के रूप में वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद-भारतीय पेट्रोलियम संस्थान (सीएसआईआर आईआईपी) के सूक्ष्म लघु एवं माध्यम उद्यम सम्मेलन (एमएसएमई मीट) और समग्र

(पैन) सीएसआईआर-सहयोग को संबोधित करते हुए, डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि भारत में अब तक अप्रयुक्त अपशिष्ट की एक ऐसी बड़ी मात्रा है जो संपदा में परिवर्तित करने के लिए उपलब्ध है।

केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार),

प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने आज कहा कि भारत विश्व की "चक्रीय अर्थव्यवस्था (सर्कुलर इकोनॉमी)" में एक प्रमुख योगदानकर्ता बनने के लिए तैयार है।

नई दिल्ली में "एक सप्ताह-एक



प्रयोगशाला (वन वीक-वन लैब) कार्यक्रम के तहत वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद-भारतीय पेट्रोलियम संस्थान (सीएसआईआर-आईआईपी) के सूक्ष्म लघु एवं माध्यम उद्यम सम्मेलन (एमएसएमई मीट) और समग्र (पैन) सीएसआईआर-सहयोग को संबोधित करते हुए, डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि भारत में अब तक अप्रयुक्त अपशिष्ट की एक ऐसी बड़ी मात्रा है जो संपदा में परिवर्तित करने के लिए उपलब्ध है और जिसका पहले उपयोग नहीं किया जा सका था क्योंकि तब न तो ऐसी तकनीक उपलब्ध थी, न ही इसे हमारी सामाजिक संस्कृति के हिस्से के रूप में लाया गया था। लेकिन प्रौद्योगिकी विकास की बढ़ती गति और अधिक से अधिक सामाजिक जागरूकता के साथ, यह अर्थव्यवस्था का एक समृद्ध स्रोत बन जाएगा जो भारत के लिए विशिष्ट होगा। उन्होंने कहा कि इसके अलावा, यह भारत को अन्य प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं पर बढ़त देगा।

मंत्री महोदय ने इस बात पर प्रकाश डाला कि “अपशिष्ट (कचरा) आने वाले

समय की संपदा है” और यह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के वैश्विक पर्यावरणीय कार्रवाई के केंद्र में भारत की परिकल्पना के अनुरूप है।

मंत्री महोदय ने उल्लेख किया कि सीएसआईआर-आईआईपी, देहरादून देश की एकमात्र प्रयोगशाला है जो संपदा के स्थान पर अपशिष्ट का प्रयोग कर रही है।

उन्होंने कहा कि यह अगली पीढ़ी के लिए काम करने वाला संस्थान है। उन्होंने कहा कि अपशिष्ट से संपदा (वेस्ट टू वेल्थ) की अवधारणा अपेक्षाकृत नई है और आप इसके पथप्रदर्शक हैं। मंत्री महोदय ने

और उद्योग जगत के साथ समन्वयन से काम करने का आग्रह किया ताकि निरंतर विकास के लिए व्यापक एकीकरण के हिस्से के रूप में काम किया जा सके।

सीएसआईआर-भारतीय पेट्रोलियम संस्थान (सीएसआईआर-आईआईपी) देहरादून के निदेशक डॉ. अंजन रे ने कहा कि सीएसआईआर-आईआईपी के लिए दिपक्षीय कार्यक्षेत्र (मैंडेट) निर्धारित हैं (क) भारत को अपने आयातित ईंधन के बोझ को कम करने में सहायता करना, और (ख) ऊर्जा को बढ़ाने के लिए साक्ष्य-आधारित



वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) की प्रयोगशालाओं से सूक्ष्म लघु एवं माध्यम उद्यम (एमएसएमई) क्षेत्र

अनुसंधान, विकास और क्षेत्र परिनियोजन की पहुंच और सामर्थ्य का उपयोग करके हमारे ऊर्जा उपयोग के डीकार्बनाइजेशन

में राष्ट्र की सहायता करना।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा, “एक सप्ताह—एक प्रयोगशाला (वन वीक—वन लैब—ओडब्ल्यूओएल)” कार्यक्रम को सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के बीच साझेदारी को मजबूत करने का एक अवसर होना चाहिए क्योंकि प्रत्येक प्रयोगशाला के पास विशिष्ट जनादेश है और भोजन से लेकर ईंधन, औषधियों, पर्यावरण, चमड़ा, जीनोमिक्स, भूविज्ञान और एवं सामग्री जैसे कई अन्य विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञता है। इसके अलावा, ओडब्ल्यूओएल सीएसआईआर प्रयोगशालाओं को उनके काम का गहन विश्लेषण और सराहना करने और समाज की बेहतरी के लिए इसका उपयोग करने में सक्षम बनाता है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि भारत 2070 तक शुद्ध शून्य ग्रीन हाउस गैस (जीरो जीएचजी) उत्सर्जन प्राप्त करते हुए बढ़ती जनसंख्या के लिए विश्वसनीय, सस्ती और टिकाऊ ऊर्जा सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है, लेकिन इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करने और ठोस ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

भारत का ऊर्जा उत्पादन जीवाश्म ईंधन (59.8 प्रतिशत) पर निर्भर करता है, जिसमें कोयले का योगदान लगभग 51 प्रतिशत है, हालांकि नवीकरणीय ऊर्जा भी प्रभावशाली 38.5 प्रतिशत तक बढ़ गई है। इसलिए अभी भी ऊर्जा क्षेत्र को और अधिक कार्बन मुक्त (डीकार्बनाइज) करने की आवश्यकता है, जिसके लिए नवीकरणीय ऊर्जा के साथ जीवाश्म ईंधन को बदलने, पुराने बिजली संयंत्रों से जीवाश्म कार्बन डाईऑक्साइड (सीओ 2)

उत्सर्जन को कम करने और कार्बन पृथक्करण के माध्यम से अपरिहार्य कार्बन उत्सर्जन को हटाने की आवश्यकता होगी।

यहीं पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी को प्रमुख भूमिका निभानी है। मंत्री महोदय ने कोविड-19 महामारी के दौरान राष्ट्र की सेवा करने में उल्लेखनीय अनुकूलनशीलता और लचीलेपन के लिए सीएसआईआर—आईआईपी के प्रयासों की सराहना करते हुए अपने सम्बोधन का समापन किया।

उन्होंने सभी सीएसआईआर प्रयोगशालाओं से आग्रह किया कि वे इस “एक सप्ताह—एक प्रयोगशाला” कार्यक्रम का उपयोग निरंतर और प्रेरक प्रयासों में संलग्न होने के अवसर के रूप में करें ताकि सभी हितधारकों की भागीदारी को स्थायी रूप से विकसित किया जा सके।

एमएसएमई की बैठक और उसके साथ सीएसआईआर—आईआईपी का समग्र (पैन) सीएसआईआर सहयोग इस पहुंच को उसके सम्मानित एमएसएमई भागीदारों के प्रयासों को प्रदर्शित करेगा, जो न केवल इसकी प्रौद्योगिकियों के कार्यान्वयन में सहायक रहे

हैं, बल्कि उन्हें भारत की विकास गाथा का एक अभिन्न अंग माना जाता है। यह आयोजन सीएसआईआर—आईआईपी के एमएसएमई भागीदारों के लिए उपयुक्त प्रतिक्रिया (फीडबैक) देने और अन्य प्रेरित एमएसएमई सहयोगियों के साथ भाईचारे की भावना विकसित का एक उपयुक्त अवसर होगा।

सीएसआईआर—आईआईपी की मेडिकल ऑक्सीजन प्रौद्योगिकी, बायोगैस शोधन प्रौद्योगिकी, उन्नत पीएनजी बर्नर और उन्नत गुड़ भट्टी इस विचार—विमर्श के मुख्य आकर्षण होंगे। पैन—सीएसआईआर सहयोग का यह प्रदर्शन सीएसआईआर—आईआईपी के आंतरिक—सीएसआईआर सहयोगी अनुसंधान को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच प्रदान करेगा।

सीएसआईआर—आईआईपी के वैज्ञानिकों और सीएसआईआर की अन्य प्रयोगशालाओं के उनके सहयोगियों की संयुक्त प्रस्तुतियां हाल की उन गतिविधियों और उपलब्धियों को उजागर करेंगी जो राष्ट्रीय नेतृत्व के आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना से जुड़ी हैं।



सीएसआईआर-सीरी में प्रशासनिक कार्यशाला का आयोजन

ILFkku में दिनांक 11 अप्रैल, 2022 को आचरण नियमों (Conduct Rules) पर प्रशासनिक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में सभी सहकर्मियों के लाभार्थ आचरण नियमों पर आमंत्रित व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यशाला में व्याख्यान हेतु पूर्व प्रशासन नियंत्रक/उपसचिव श्री मुकुंद सहाय को आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला का उद्देश्य सभी सहकर्मियों को केंद्रीय कर्मचारियों के लिए लागू आचरण नियमों की जानकारी देना था। कार्यशाला की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया ने की। कार्यक्रम का संचालन श्री जय शंकर शरण, प्रशासन नियंत्रक ने किया। संस्थान के सभागार में आयोजित कार्यशाला में संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक, अधिकारीगण एवं अन्य सहकर्मियों उपस्थित थे।

श्री मुकुंद सहाय, पूर्व प्रशासन नियंत्रक, सीएसआईआर-एनबीआरआई, लखनऊ ने सहकर्मियों को केंद्रीय सिविल सेवा (आचरण) नियमावली, 1964 पर विस्तार से जानकारी दी। अपने आरंभिक संबोधन में उन्होंने

आचरण नियमों की आवश्यकता एवं पृष्ठभूमि से भी अवगत कराया। अपने व्याख्यान के माध्यम से उन्होंने बताया कि केंद्रीय कर्मचारियों के रूप में न केवल कार्यालय अपितु कार्यालय से बाहर भी हमारा लगभग प्रत्येक आचरण/व्यवहार 'आचरण नियमावली' के दायरे में आता है। उन्होंने नियमावली के महत्वपूर्ण बिंदुओं को रेखांकित करते हुए उच्चतम

न्यायालय के तत्संबंधी निणयों की भी चर्चा की। कार्यशाला में उपस्थित सहकर्मियों से परस्पर संवाद के दौरान उन्होंने सहकर्मियों के प्रश्नों का उत्तर देकर उनकी जिज्ञासा को शांत किया। अंत में उन्होंने यह अवसर उपलब्ध कराने के लिए निदेशक, सीएसआईआर-सीरी के प्रति आभार व्यक्त किया।

संस्थान के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि



संस्थान के प्रत्येक अधिकारी/कर्मचारी के लिए आचरण नियम जैसे महत्वपूर्ण विषय की जानकारी आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है।

उन्होंने संस्थान के अधिकारियों एवं अन्य कर्मिकों को आचरण नियमों से अवगत कराने एवं महत्वपूर्ण जानकारी देने के लिए श्री मुकुंद सहाय, पूर्व प्रशासन नियंत्रक, सीएसआईआर-एनबीआरआई, लखनऊ को



धन्यवाद दिया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि सभी सहकर्मियों व्याख्यान से लाभान्वित हुए होंगे।

आमंत्रित व्याख्यान के उपरांत डॉ पंचारिया ने श्री मुकुंद सहाय को संस्थान की ओर से शॉल व स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया।

इससे पूर्व श्री जय शंकर शरण, प्रशासन नियंत्रक, सीएसआईआर-सीरी ने कार्यशाला का संयोजन करते हुए कार्यशाला में उपस्थित सहकर्मियों को आमंत्रित अतिथि का संक्षिप्त परिचय दिया। अपने संबोधन में उन्होंने बताया कि इस महत्वपूर्ण विषय पर कार्यशाला/व्याख्यान का आयोजन सीएसआईआर मुख्यालय

से प्राप्त दिशानिर्देशों के अनुपालन में किया जा रहा है।

अंत में श्री जय शंकर शरण ने औपचारिक रूप से धन्यवाद ज्ञापित करते हुए आमंत्रित व्याख्यान देने के लिए श्री मुकुंद सहाय के प्रति आभार व्यक्त किया। साथ ही कार्यशाला/व्याख्यान के आयोजन की अनुमति प्रदान करने के लिए निदेशक, सीएसआईआर-सीरी को धन्यवाद दिया।

सीएसआईआरआई-सीडीआरआई में स्वच्छता के लिए शपथ लेने के साथ स्वच्छता पखवाड़ा समारोह शुरू हुआ

महात्मा गांधी ने एक ऐसे भारत का सपना देखा था जो न सिर्फ आजाद हो बल्कि स्वच्छ और विकसित भी हो। उन्होंने कहा कि आजादी से ज्यादा जरूरी स्वच्छता है। गांधी जी के मार्गदर्शन एवं सोच के अनुसार तथा स्वच्छ भारत मिशन के तहत, हमारा कर्तव्य है कि हम देश को साफ और स्वच्छ रखकर भारत माता की सेवा करें, इसलिए इस संदर्भ में, सीएसआईआर-सीडीआरआई, लखनऊ में दिनांक 1 मई से 15 मई 2023 तक स्वच्छता पखवाड़ा 2023 आयोजित किया जा रहा है।

संस्थान में स्वच्छता शपथ ग्रहण समारोह के साथ पन्द्रह दिवसीय समारोह की शुरुआत हुई। निदेशक डॉ. राधा रंगराजन सहित स्टाफ और वैज्ञानिकों तथा छात्रों ने संकल्प लिया कि वे स्वच्छता के प्रति प्रतिबद्ध रहेंगे और इसके लिए समय देंगे। इस अवसर पर उन्होंने स्वच्छता के महत्व के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि हमारे आसपास की स्वच्छता हमारे मन की स्वच्छता को दर्शाती है इसलिए हमें अपनी आंतरिक एवं बाहरी स्वच्छता के बारे में ध्यान अवश्य देना चाहिए।

इस मौके पर स्वच्छता पखवाड़ा समारोह के संयोजक, इंजीनियर रणवीर सिंह ने समारोह के दौरान आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा, इस आयोजन के लिए विभिन्न गतिविधियों की योजना बनाई गई है। वृक्षारोपण के साथ नए लॉन की सफाई एवं बेहतर बनाना,



सीडीआरआई निवासियों के बीच जागरूकता अभियान चलाना, स्वच्छ एवं हरित परिसर के लिए सीएसआईआर-सीडीआरआई परिवार द्वारा श्रमदान, पुराने एवं अप्रचलित उपकरणों



का निपटान, पुराने अभिलेखों का डिजिटाइजेशन एवं छंटाई करना, वाटर कूलर, प्यूरीफायर एवं पानी की टंकियों की सफाई, एचवीएसी प्लांट एयर फिल्टर की सफाई एवं विभागों में ताजे पानी की आपूर्ति,

फायर हाइड्रेंट पंप आदि को स्वच्छ बनाए रखना, इमारतों की सफाई, परिसर में पानी के जमाव की जाँच आदि कार्य करने होंगे। सभी प्रयोगशालाओं और कार्यालयों के लिए विभिन्न रंग के अपशिष्ट बिन एवं स्वच्छता किट का वितरण भी किया जाएगा।

इसके अतिरिक्त एक जागरूकता अभियान और रैली भी आयोजित की जाएगी तथा लोगों को जागरूक करने के लिए सीडीआरआई के परिसर के विभिन्न स्थानों पर जागरूकता के लिए बैनर/

पोस्टर भी लगाए जाएंगे। इस दौरान सीएसआईआर-सीडीआरआई में विशेषज्ञों द्वारा जनजागरूकता पर एक सामूहिक चर्चा एवं कुछ व्याख्यान भी आयोजित किए जाएंगे।

सीईसीआरआई-कराइकुडी के नए निदेशक

M. के. रमेश ने शनिवार को सीएसआईआर –सेंट्रल इलेक्ट्रोकेमिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीईसीआरआई), कराइकुडी के निदेशक के रूप में पदभार ग्रहण किया।

उन्होंने 1993 में अपना एम.एससी (रसायन विज्ञान) मैंगलोर विश्वविद्यालय से और पीएच.डी. (सॉलिड स्टेट एंड स्ट्रक्चरल केमिस्ट्री) 2000 में भारतीय विज्ञान संस्थान बेंगलुरु से प्राप्त की।

उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्र ऊर्जा भंडारण के लिए सामग्री हैं, विशेष रूप से ली-आयन बैटरी और अन्य भविष्य के ऊर्जा भंडारण उपकरणों जैसे ना-आयन, ली-एस, ली-एयर और सभी ठोस राज्य बैटरी के लिए।

श्री रमेश वर्ष 2001-06 के दौरान मैरीलैंड विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका और लॉस एलामोस नेशनल लेबोरेटरी, संयुक्त राज्य अमेरिका में पोस्टडॉक्टरल फेलो थे।

वर्ष 2007 में, वह जवाहरलाल नेहरू सेंटर फॉर एडवांस्ड साइंटिफिक रिसर्च (JNCASR), बेंगलूर में एक फेलो

के रूप में शामिल हुए और 2008 में सीएसआईआर –सीईसीआरआई में क्विक हायर साइंटिस्ट के रूप में शामिल होने तक वहाँ काम किया।

तब से, श्री रमेश यहाँ कार्यरत हैं। वर्ष 2016 में वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक के वर्तमान पद पर पदोन्नत होने से पहले विभिन्न पदों पर कार्य करते रहे।

आईआईएससी, बेंगलूर से सर्वश्रेष्ठ पीएच.डी. थीसिस के लिए के. पी. अब्राहम मेडल के प्राप्तकर्ता श्री रमेश ने प्रतिष्ठित जर्नल नेचर मैटेरियल्स में दो पत्रों सहित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सहकर्मियों-समीक्षित पत्रिकाओं में 91 शोध पत्र प्रकाशित किए हैं। उन्होंने दो पेटेंट भी फाइल किए हैं। उन्होंने पांच प्रौद्योगिकियां विकसित की हैं और दो प्रक्रियाओं/जानकारी को स्थानांतरित किया है। उन्होंने 10 पीएच.डी विद्वान और



कई स्नातकोत्तर छात्रों का मार्गदर्शन किया है। वर्तमान में, वह स्वदेशी ली-आयन बैटरी प्रोटोटाइप विकसित करने वाली टीम का नेतृत्व कर रहे हैं। वह विभिन्न कैथोड रसायन जैसे कि LiNMC, LiNCI, आदि युक्त बेलनाकार-प्रकार की ली-आयन बैटरियों के निर्माण में शामिल हैं। उन्होंने ठोस इलेक्ट्रोलाइट्स के रूप में गार्नेट चरणों का उपयोग करके सभी ठोस अवस्था ली-आयन बैटरी तकनीक विकसित की है। उन्होंने सर्वप्रथम स्तरित कैथोड की क्षमता को दोगुना करने में प्रतिवर्ती आयनिक रेडॉक्स रसायन की भूमिका स्थापित की थी।

उत्कृष्ट योगदान के लिए डॉ. अतुल सम्मानित

केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सीडीआरआई) में डॉ. अतुल कुमार, मुख्य वैज्ञानिक, औषधीय एवं प्रक्रिया रसायन विभाग द्वारा संस्थान को दिये गए उत्कृष्ट योगदान को मान्यता देने एवं सम्मानित करने के लिए एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। निदेशक, सीडीआरआई डा. राधा रंगराजन ने संगोष्ठी में सभी का

स्वागत किया और औषधीय रसायन विज्ञान के क्षेत्र में डॉ. अतुल कुमार के उत्कृष्ट योगदान के लिए उनका धन्यवाद दिया। इस अवसर पर संगोष्ठी में दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली के प्रो. दीवान एस. रावत ने पार्किंसंस रोग के इलाज के



लिए आशा की किरण के रूप में न्यूक्लियर रिसेप्टर नर एगोनिस्ट की खोज के बारे में जानकारी दी।

उन्होंने आगे कहा कि पार्किंसंस रोग एक न्यूरो-डिजनरेटिव डिसऑर्डर है।

दुनिया भर में लगभग 10 मिलियन लोगों को पार्किंसंस रोग है और पार्किंसंस रोग के इलाज के लिए फिलहाल कोई प्रभावी दवा उपलब्ध नहीं है।

अभी उपलब्ध उपचारों का उद्देश्य लक्षणों को कम करना ही है।

हैदराबाद विश्वविद्यालय की महिला वैज्ञानिक डा. आकांक्षा गुप्ता ने काइरल पूल एजेंट के रूप में कार्बोहाइड्रेट के माध्यम से एंटी-कैंसर एजेंट्स, वेंगामाइड एवं पायरानिसिन जो की प्राकृतिक उत्पाद हैं का लैब में सम्पूर्ण संश्लेषण की क्रियाविधि की खोज के बारे में चर्चा की।

डा. शर्मा सहायक प्राध्यापक रसायन विज्ञान विभाग मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर ने आइसोसाइनाइड्स के कार्बनिक रसायन एवं उनकी फ्लास्क से इलेक्ट्रोमिकल सेल तक की यात्रा के विषय के बारे में जानकारी दी।

वैज्ञानिक सत्र के पश्चात संगोष्ठी



में डा. अतुल कुमार के लगभग सभी 23 पीएचडी छात्र-छात्राओं ने कार्यक्रम में सम्मिलित होकर उनका अभिनंदन किया और कृतज्ञता के साथ अपने विचार साझा किए।

निदेशक डा. राधा रंगराजन ने उन्हें पट्टिका और स्मृतिचिन्ह देकर सम्मानित किया।

डा. अतुल कुमार के समूह के शोध कार्यों में मुख्यतः महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी विकारों (डब्ल्यूएचआरडी) के लिए जैविक रूप से महत्वपूर्ण योगिकों के तर्कसंगत

डिजाइन और संश्लेषण शामिल हैं।

उन्होंने सेन्थांकसीडीआरआई-93/373 नामक यौगिक का डिजाइन एवं संश्लेषण किया है, जो ऑस्टियोपोरोसिस की रोकथाम और उपचार में एक आशाजनक विकल्प हो सकता है।

डॉ. संजय बत्रा और डा. पी.पी. यादव ने धन्यवाद ज्ञापन किया और गोष्ठी का समापन किया।

सीएसआईआर-आईआईआईएम ने छात्रों, ग्रामीणों के बीच नवाचार, स्टार्टअप के बारे में जागरूकता बढ़ाई

सीएसआईआर-इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंटीग्रेटिव मेडिसिन (सीएसआईआर-आईआईआईएम) टेक्नोलॉजी बिजनेस इनक्यूबेटर ने जम्मू विश्वविद्यालय के

उधमपुर परिसर के सहयोग से नवाचार, स्टार्टअप, ऊष्मायन के बारे में छात्रों और ग्रामीणों के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए गरनाई लोहा गांव में एक कार्यक्रम का

आयोजन किया।

उधमपुर में आगामी क्षेत्रीय स्टार्टअप कॉन्क्लेव के अनुरूप जागरूकता अभियान चलाया गया। रोड शो का आयोजन



उधमपुर परिसर, जम्मू विश्वविद्यालय द्वारा सफलतापूर्वक किया गया।

उद्घाटन सत्र के दौरान जम्मू विश्वविद्यालय के उधमपुर परिसर के रेक्टर प्रोफेसर यशपाल शर्मा ने छात्रों और स्थानीय लोगों के साथ बातचीत करते हुए बताया कि कई कारणों से कंपनियों के लिए नए विचार और नवाचार महत्वपूर्ण हैं।

“वे इसका उपयोग नई वस्तुओं और सेवाओं को विकसित करने, नए बाजारों में विस्तार करने और अधिक प्रतिस्पर्धी बनने के लिए कर सकते हैं,” उन्होंने कहा।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. सौरभ सरन, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-आईआईआईएम और पीआई, आईआईआईएम-टीबीआई, जम्मू और अंकुश वर्मा, समन्वयक, आईआईआईएम एवं टीबीआई, सीएसआईआर-आईआईआईएम, जम्मू थे।

उन्होंने स्पष्ट किया कि जागरूकता कार्यक्रम का उद्देश्य स्टार्ट-अप, स्वरोजगार और स्टार्टअप इकोसिस्टम के बारे में जनता को जागरूक और शिक्षित करना है।

उन्होंने वर्तमान प्रतिस्पर्धी व्यापार उद्योग में नौकरी पाने की संभावनाओं को बढ़ाने के लिए आवश्यक उन्नत कौशल विकास प्रशिक्षण के मूल्य पर जोर दिया।

गरनाई लोह्टा के छात्रों और लोगों ने इंटरैक्टिव रोड शो सत्र में भाग लिया, जिसमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी आधारित व्यवसाय और जनशक्ति प्रशिक्षण कार्यक्रमों के महत्वपूर्ण तत्वों पर प्रकाश डाला गया।

आयोजन के दौरान, आईआईआईएम-टीबीआई स्टार्टअप्स, मैसर्स वेला न्यूट्रीशन के श्री मोक्षक कोटरु और मैसर्स जेपी लाइफ साइंस के जयप्रकाश बेहरा ने अपने हर्बल उत्पादों का प्रदर्शन किया।

नए स्टार्टअप आइडिया वाले ग्रामीण इस रोड शो में शामिल हुए और अपनी कृतियों को प्रदर्शित किया, जिसमें सॉफ्ट टॉयज, कलीरा और कचरे से बना सबसे बड़ा स्टार्टअप शामिल था।

डॉ. सरन ने इस बात पर प्रकाश डाला कि डॉ. जबीर अहमद, निदेशक, सीएसआईआर-इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंटीग्रेटिव मेडिसिन, जम्मू के नेतृत्व में जम्मू और कश्मीर के स्थानीय समुदाय के बीच

कृपया ध्यान दें

सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं के नोडल अधिकारियों/जनसम्पर्क अधिकारियों/हिन्दी अधिकारियों/अनुवादकों से अनुरोध है कि वे अपने संस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों तथा वैज्ञानिक अनुसंधान उपलब्धियों/पुरस्कार/सम्मानों/कार्यशालाओं/संगोष्ठियों आदि से सम्बन्धित समाचार/सूचना सीएसआईआर समाचार में प्रकाशन के लिए हार्ड अथवा सॉफ्ट कॉपी में संपादक, सीएसआईआर समाचार को भेजने की कृपा करें।

संपादक
सीएसआईआर समाचार

उद्यमशीलता के महत्व के बारे में सक्रिय रूप से प्रचार करने और जागरूकता पैदा करने के लिए प्रतिबद्ध है।

सीएसआईआर- निस्पर द्वारा 'विज्ञान-समाज सम्पर्क' कार्यक्रम का आयोजन



3 एप्रिल 2023 को, सीएसआईआर-निस्पर ने नई दिल्ली के बुराड़ी में गवर्नमेंट गर्ल्स सेकेंडरी स्कूल (सर्वोदय विद्यालय) में "साइंस-सोसायटी कनेक्ट: इनक्यूलेटिंग साइंटिफिक टैप इन यंग माइंड्स" कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का प्राथमिक उद्देश्य युवा दिमाग में वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देना और विज्ञान शिक्षा को बढ़ावा देना था। इस आयोजन में 10वीं कक्षा के 50 छात्रों ने अपने 4 संबंधित शिक्षकों के साथ सक्रिय रूप से भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत श्री सी.बी. सिंह, प्रमुख, जिज्ञासा, प्रशिक्षण और मानव संसाधन प्रभाग द्वारा स्वागत के

साथ हुई। अपने स्वागत भाषण में, उन्होंने छात्रों को वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) और सीएसआईआर-निस्पर सहित इसकी विभिन्न प्रयोगशालाओं से परिचित कराया। श्री सिंह ने छात्रों के साथ भी बातचीत की और सीएसआईआर की प्रयोगशालाओं में होने वाले औद्योगिक अनुसंधान के प्रकारों पर मूल्यवान अंतर्दृष्टि साझा की। उन्होंने साइंस-सोसायटी कनेक्ट के महत्व पर जोर दिया और बताया कि कैसे यह वैज्ञानिक समुदाय और समाज के बीच की खाई को पाटने में मदद कर सकता है। उन्होंने स्कूली छात्रों के बीच विज्ञान शिक्षा को बढ़ावा देने में जिज्ञासा और इसकी

भूमिका के बारे में भी बात की।

छात्रों को G20 शिखर सम्मेलन की भारत की अध्यक्षता, इसकी उत्पत्ति, भूमिका, भाग लेने वाले देशों और Science 20 (S20) एंगेजमेंट ग्रुप के बारे में जागरूक किया गया और छात्रों को इसकी तीन उप श्रेणियों के तहत S20 में योगदान कैसे दिया जा सकता है।

उन्होंने छात्रों को जिज्ञासा और जिज्ञासु होने के लिए प्रोत्साहित किया और विज्ञान के लिए एक जुनून विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जो उन्हें भविष्य के वैज्ञानिक और नवप्रवर्तक बनने में मदद कर सके।

सीएसआईआर-निस्पर की प्रधान



सीएसआईआर-निस्पर, नई दिल्ली द्वारा गवर्नमेंट गर्ल्स सेकेंडरी स्कूल, बुराड़ी में आयोजित साइंस-सोसायटी कनेक्ट प्रोग्राम की एक झलक

वैज्ञानिक डॉ. सुमन रे ने पिछले आठ दशकों की उल्लेखनीय “सीएसआईआर की उपलब्धियों” पर एक व्यापक प्रस्तुति दी।

डॉ. रे ने विभिन्न सीएसआईआर संस्थानों द्वारा हासिल की गई विभिन्न तकनीकों और अभिनव समाधानों पर जोर दिया, जिन्होंने विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और देश में समाज को लाभान्वित किया है।

सत्र में सक्रिय भागीदारी और जुड़ाव सुनिश्चित करने, छात्रों की एकाग्रता और

समझ के स्तर का आकलन करने के लिए प्रस्तुतिकरण के बाद एक प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के दौरान, डॉ. सुमन रे ने औषधीय पौधों पर एक आकर्षक प्रस्तुति भी दी, जिसमें उन्होंने विभिन्न पौधों और उनके विभिन्न भागों पर चर्चा की, जिनका उपयोग समग्र स्वास्थ्य देखभाल के लिए किया जा सकता है।

प्रस्तुति अत्यधिक आकर्षक और सूचनात्मक थी, जिसने उन छात्रों का ध्यान आकर्षित किया जिन्होंने इस विषय में काफी

रुचि दिखाई। प्रस्तुति के बाद एक क्विज का आयोजन किया गया, जिसमें छात्रों की भागीदारी और उत्साह का उच्च स्तर स्पष्ट था।

जिज्ञासा टीम ने छात्रों के लिए दो एनिमेटेड फिल्में दिखाई। संयुक्त राष्ट्र द्वारा स्थापित 17 सतत विकास लक्ष्यों में से एक, महासागर संरक्षण के महत्व को उजागर करने और सतत विकास लक्ष्य 14 को बढ़ावा देने के विषय पर केंद्रित पहली फिल्म “पानी के नीचे जीवन” पर केंद्रित है। वीडियो का उद्देश्य छात्रों के बीच

महासागरों की रक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में जागरूकता बढ़ाना और उन्हें इस लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में कार्यवाई करने के लिए प्रेरित करना है। दूसरी फिल्म “भारतीय अंतरिक्ष यात्री जिन्होंने इसे अंतरिक्ष में बनाया” के विषय पर केंद्रित है, जो अंतरिक्ष में सफलतापूर्वक प्रवेश करने वाले भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों की उल्लेखनीय उपलब्धियों को प्रदर्शित करते हैं।

यह फिल्म युवा छात्रों के लिए एक प्रेरणा का काम करती है, उन्हें विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में करियर बनाने के लिए प्रोत्साहित करती है।

कार्यक्रम का समापन छात्रों के बीच निस्पर की मासिक लोकप्रिय विज्ञान हिंदी पत्रिका “विज्ञान प्रगति” और अंग्रेजी पत्रिका “साइंस रिपोर्टर” के विशेष अंक के वितरण के साथ हुआ, जो विज्ञान को लोकप्रिय बनाने में लगे भारतीय संगठनों पर केंद्रित था।

विज्ञान शिक्षा को बढ़ावा देने और युवाओं को विज्ञान और प्रौद्योगिकी में करियर बनाने के लिए प्रोत्साहित करने में यह कार्यक्रम एक बड़ी सफलता थी।



कार्यक्रम का समापन डॉ. सुमन रे, प्रधान वैज्ञानिक सीएसआईआर-निस्पर द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

बुराड़ी, नई दिल्ली में सरकारी कन्या माध्यमिक विद्यालय (सर्वोदय विद्यालय) का दौरा छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए एक उपयोगी और समृद्ध अनुभव साबित हुआ।

कार्यक्रम ने युवा मन में वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने और विज्ञान और समाज के बीच सीधा संबंध स्थापित करके विज्ञान शिक्षा को बढ़ावा देने के अपने लक्ष्य को सफलतापूर्वक प्राप्त किया। यह उम्मीद

की जाती है कि इस तरह की पहल का छात्रों पर दीर्घकालीन प्रभाव पड़ेगा, जिससे उन्हें विज्ञान की अपार क्षमता और भविष्य को आकार देने में इसकी भूमिका का एहसास करने में मदद मिलेगी। कार्यक्रम के हिस्से के रूप में, क्विज राउंड के दौरान अपने ज्ञान और विशेषज्ञता का प्रदर्शन करने वाले छात्रों को किट प्रदान की गई। ये किट उनकी कड़ी मेहनत और सीखने के प्रति समर्पण की सराहना के प्रतीक के रूप में काम करेगी।